CLASS-9
SUBJECT : SECOND LANG. (HINDI)
POEM 1- साखी
(कबीर दास के दोहे और उनकी व्याख्या)

1} गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय ।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो बताए ।।

कबीरदास कहते हैं कि गुरु और भगवान दोनों मेरे सामने खड़े हैं । मैं पहले किसके चरण स्पर्श करूं ? वे फिर कहते हैं उनके विचार में तो पहले गुरु के ही चरण स्पर्श करने चाहिए क्योंकि गुरु ईश्वर के समान होते हैं तथा गुरु के ज्ञान के कारण ही हमें ईश्वर की प्राप्ति होती है । इस निश्चय के साथ वे पहले गुरु के चरण स्पर्श करते हैं और फिर भगवान के ।

2} जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं ।
प्रेम गली अति सांकरी, तामे दो न समाहिं ।

कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक हमारे हृदय में अहंकार रहेगा तब तक वहां ईश्वर का निवास नहीं हो सकता और यदि एक बार हमारे हृदय में ईश्वर का निवास हो जाए तो फिर अहंकार गायब हो जाएगा । ईश्वर के प्रेम की यह गली इतनी सकरी है अर्थात तंग है उसमें दोनों नहीं आ सकते यहां कबीरदास यह कहना चाहते हैं कि हमारे हृदय में या तो अहंकार रहेगा या भगवान । कबीर दास यह कहना चाहते हैं कि मन में अहंकार रहते हुए हमें ईश्वर की प्राप्ति कभी भी नहीं हो सकतीअर्थात ईश्वर को प्राप्त करने के लिए हमें अपने अहंकार का त्याग करना ही पड़ेगा ।

3} काकर पाथर जोरि के मस्जिद लई बनाय ।
ता चढ़ि मुला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय ।।

प्रस्तुत दोहे में कबीर दास जी मनुष्य की रूढ़िवादिता का विरोध करते हुए कहते हैं कि हमें ईश्वर की भक्ति करने के लिए किसी भी प्रकार के दिखावे की आवश्यकता नहीं है । वे कहते हैं कि लोगों ने कंकड़ पत्थर जोड़ कर मस्जिद बना ली और रोज मौलवी वहां से अजान भी देता है । उनका प्रश्न है कि क्या हमारा खुदा बहरा है जो उस तक हमारी प्रार्थना नहीं पहुंच पाएगी और इसके लिए हमारा चिल्लाना जरूरी है ? आगे वे समझाते हुए कहते हैं कि ईश्वर तो हम सबके मन की बात जानते हैं । इसके लिए किसी दिखावे की कोई जरूरत नहीं है । हम सच्चे हृदय से ईश्वर को याद करेंगे तो हमारी प्रार्थना उन तक जरूर पहुंच जाएगी ।

4} पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजू पहाड़ ।
ताते ये चाकी भली, पीस खाए संसार ।।

प्रस्तुत दोहे में भी कबीर दास जी हमारी रूढ़िवादिता पर ही प्रहार करते हैं । वे लोगों द्वारा की जाने वाली मूर्ति पूजा को दिखावा मानते हुए उसका विरोध करते हैं । वे कहते हैं कि यदि पत्थर को पूजने से ही ईश्वर की प्राप्ति हो जाती हो जाए तो मैं पहाड़ पूजने को भी तैयार हूं । वे आगे कहते हैं कि इससे तो

अच्छा कि हम उस चक्की की पूजा करें जिसका पीसा हुआ अनाज सारा संसार खाता है। इस प्रकार कबीरदास ने इस दोहे में हिंदुओं की मूर्ति पूजा का विरोध करते हुए समाज में फैली बुराइयों को मिटाने का प्रयास किया है।

5) सात समंद की मसि करो, लेखनी सब बनराय।
सब धरती कागद करो, हरि गुन लिखा न जाय।।

प्रस्तुत दोहे में कबीर दास जी भगवान के गुणों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यदि मैं सातों समुद्रों की स्याही बना लूं और पृथ्वी के सभी वनों की कलम बना लूं और सारी धरती को कागज बना कर उस पर ईश्वर के गुणों को लिखना चाहूं तो भी यह संभव नहीं हो पाएगा; अर्थात ईश्वर के गुण अपार है। उनके गुणों को ना ही जाना जा सकता है ना ही कहा जा सकता है और ना ही लिखा जा सकता है।

व्याख्यामूलक प्रश्न -

1) पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार।
ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार।।
सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराय।
सब धरती कागद करौं, हरि गुन लिखा न जाय

क) यदि पत्थर की पूजा करने से भगवान मिलते हैं तो कबीरदास जी क्या पूजना चाहते हैं?

ख) कवि ने चाकी को भला क्यों बताया है?

ग) कवि हरि के गुणों का वर्णन करने के लिए किन-किन वस्तुओं का प्रयोग करना चाहते हैं?

घ) हरि के गुणों के बारे में कबीर दास जी ने क्या कहा है?

2) जब मैं था तब हरि नहीं,अब हरि हैं मैं नाहि।
प्रेम गली अति सांकरी, तामे दो न समाहि।।
कांकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे,क्या बहरा हुआ खुदाय

क) यहां पर 'मैं' किसको कहा गया है?

ख) किस गली को सांकरी कहा गया है और क्यों?

ग) मुसलमानों की किस प्रथा पर कबीरदास ने व्यंग्य किया है?

घ) शब्दों के अर्थ लिखें - हरि, पाथर, बांग, कांकर।

3) गुरु गोविंद दोऊ खड़े,काके लागू पायं।
बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोविंद दियौ बताय।।

क) कवि ने गुरु और गोविंद में किसे श्रेष्ठ बताया है?

ख) अर्थ लिखें - दोऊ, बलिहारी, गोविंद, काके।

ग) कवि किसके ऊपर न्योछावर हो जाना चाहते हैं तथा क्यों?

घ) साखी पाठ के कवि का परिचय संक्षेप में दीजिए।

Note - कविता अभ्यास पुस्तिका (Poem work book) के साखी पाठ के सभी प्रश्नों को अभ्यास पुस्तिका में ही हल करें ।